ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–५५
दिनांक– शुक्रवार, १६ जुलाई, २०२१

## विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 34.2 एवं 26.3 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 89 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 69 प्रतिशत, हवा की औसत गति 10.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 2.4 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 7.8 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 30.5 एवं दोपहर में 39.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 9.4 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड हुई।

## मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
## (17–21 जुलाई, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 17–21 जुलाई, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में 17–18 जुलाई को आसमान में मध्यम से घने बादल छाए रह सकतें है। शेष दिनों में हल्के से मध्यम बादल रह सकतें है। अगले 24–48 घण्टो तक उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में मध्यम वर्षा हो सकती है तथा कुछ स्थानों पर जैसे पश्चिमी चम्पारण, पूर्वी चम्पारण तथा सारण जिलों में भारी वर्षा हो सकती है। 18 जुलाई के बाद वर्षा की तीव्रता मे कमी आ सकती है। उसके बाद कही–कही हल्की वर्षा होने की संभावना है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 31–35 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 24–27 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 07 से 12 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार के साथ अगले तीन दिनों तक पूरवा हवा तथा उसके बाद पछिया हवा चलने का अनुमान है।

## • समसामयिक सुझाव

- धान की रोपाई प्राथमिकता के आधार पर करें। धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के २–३ दिन बाद तथा एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (३ लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (१.५ लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (३ लीटर दवा प्रति हेक्टर) का ५००–६०० लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें।
- जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन मैं वर्षा जल का संग्रह करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें तथा धान की रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का व्यवहार सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए ३० किलोग्राम नेत्रजन, ६० किलोग्राम स्फुर एवं ३० किलोग्राम पोटाष के साथ २५ किलोग्राम जिंक सल्फेट या १५ किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का व्यवहार करें।
- वर्तमान मौसम पौधशाला में आद्रगलन (डेम्पिग ऑफ) रोग के विस्तार के लिए अनुकूल है। यह एक कवक द्वारा फैलने वाला मृदा जनित रोग है, जिसमें पौधशाला के नवजात अंकुरित पौध के तने जड़ के ऊपर भूमि के पास से सड़ जाते हैं और पौध मर जाते हैं। रोग की तीव्रता की स्थिती में रोग ग्रस्त पौध क्यारीयों में गुच्छों में दिखतें हैं। कभी-कभी पूरा नर्सरी नष्ट हो जाता है। इस रोग से वचाव हेतु ट्राइकोडरमा से मृदा उपचार कर उपचारित बीज की बुआई करें। सघन बीज नहीं गिरावें, अधिक गहराई में बीज की बुआई नहीं करे। जल निकास की उचित व्यवस्था रखें। पौधशाला में रोग की विस्तार की स्थिति में कॉपर आक्सीक्लोराइड २.५ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर समान रुप से छिड़काव करें।
- मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च-३, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा, कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी०एस०एस०-२६७ अनुशंसित है। उन्नत किस्मों के लिए बीज दर १ से १.५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा २०० से ३०० ग्राम संकर किस्मों के लिए रखें। क्यारियों की चौड़ाई एक मीटर तथा लम्बाई सुविधानुसार ३-४ मीटर रखें। बीज को गिराने से पूर्व थायरम ७५ प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें।
- सब्जियों में आवश्यकतानुसार निकाई-गुड़ाई करें तथा लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। इन कीट का प्रकोप दिखाई देने पर बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर फसल में छिड़काव करें।
- उचॉस जमीन में अरहर की बुआई करें। उपरी जमीन में बुआई के समय प्रति हेक्टेयर २० किलो नेत्रजन, ४५ किलो स्फुर,२० किलो पोटाश तथा २० किलो सल्फर का व्यवहार करें। बहार, पूसा ६, नरेद्र अरहर १, मालवीय-१३, राजेन्द्र अरहर-१ आदि किस्में बुआई के लिए अनुशसित है। बीज दर १८-२० किलो प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई के २४ घंटे पूर्व २.५ ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए।
- आम के पौधों की उम्र (१० वर्ष से अधिक) के अनुसार फलन समाप्त होने के बाद अनुशंसित उर्वरको जैसे १५-२० किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद, १.२५ किलोग्राम नेत्रजन, ३००-४०० ग्राम फॉसफोरस,१.० किलोग्राम पोटाश, ५० ग्राम बोरेक्स तथा १५-२० ग्राम थाइमेट प्रति पौधा प्रति वर्ष के अनुसार उपयोग करें। जिससे अगले वर्ष पौधे फलन में आ सकें तथा उनका श्वास्थ अच्छा बना रहें।
- केला की रोपाई करें। उत्तर बिहार में लम्बी किस्मों के लिए अलपान, चम्पा, कंथाली, मालभोग, चिनियाँ, शक्कर चिनियाँ, फिआ-२३ तथा बौनी एवं खाने वाली किस्मों के लिए ग्रैडनेन, रोबस्टा, बसराई, फिआ-१ अनुशंसित है। सब्जी वाली किस्में बतीसा, सावा, बनकेल, कचकेल, फिआ-३ तथा सब्जी एवं फल दोनों में उपयोग आने वाली किस्में कोठियाँ, मुठियाँ, दुधसागर एवं चकिया अनुशंसित है। लम्बी जातियों में पौधा से पौधा की दुरी २.० मीटर है एवं बौनी जातियों में १.५ मीटर रखें।

| | |
|---|---|
| आज का अधिकतम तापमानः 34.7 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.3 डिग्री सेल्सियस अधिक | आज का न्यूनतम तापमानः 25.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.5 डिग्री सेल्सियस कम |

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी